॥श्री धन्वन्तरये नमः॥

दशम् पुष्प

शतायु की ओर

योगमासां तु यो विद्याद्देशकालोपपादितम्।
पुरुषं पुरुषं वीक्ष्य स ज्ञेयो भिषगुत्तमः।। चरक सू0 1/124

जो चिकित्सक प्रत्येक पुरूष की परीक्षा करके देश, काल के अनुसार औषधियों का प्रयोग करना जानता हो उसे उत्तम चिकित्सक कहा जाता है।

नित्यं हिताहारविहारसेवी समीक्ष्यकारी विषयेष्वसक्तः ।
दाता समः सत्यपरः क्षमावानोप्तोपसेवी च भवत्यरोगः ।। वाग्भट (अ.सं. 5/46)

जो व्यक्ति सदैव हितकर आहार-विहार का सेवन करता है, सोच-समझकर कार्य करता है, विषयों में आसक्त नहीं होता, जो दानशील, समत्व बुद्धि से युक्त, सत्यपरायण, क्षमावान, आप्तजनों की सेवा करनेवाला है, वह निरोग रहता है।

धन्वन्तरि वाटिका, राज भवन, उत्तर प्रदेश, लखनऊ
DHANWANTARI VATIKA, RAJ BHAWAN, UTTAR PRADESH, LUCKNOW

4 नवम्बर, 2010

शतायु की ओर

कामला / पीलिया

(JAUNDICE)

कारण, बचाव एवं चिकित्सा

''शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्''

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष- इस पुरूषार्थ चतुष्टय की सिद्धि के लिए सर्वतोभावेन् शरीर का स्वस्थ एवं निरोग होना आवश्यक है। रोगों से आक्रान्त शरीर के द्वारा कोई भी पुरूषार्थ सिद्ध नहीं किया जा सकता और न ही मनुष्य वांछित सफलता प्राप्त कर सकता है। लौकिक दृष्टि से हो या आध्यात्मिक दृष्टि से अपने लक्ष्य की साधना के लिए अथवा गन्तव्य तक पहुँचने के लिए मनुष्य को स्वस्थ मन और स्वस्थ शरीर की नितान्त आवश्यकता है। स्वास्थ्य जीवन की एक महत्वपूर्ण निधि है। शरीर के उचित पोषण एवं रोगनिवारणार्थ सम्यक् आहार-विहार का होना आवश्यक है। आहार द्वारा शरीर पोषण की प्रक्रिया अग्नि पर निर्भर है। आहार ग्रहण के उपरान्त उसका पाचन, शोषण एवं चयापचय आदि सभी क्रियाएं जठराग्नि के द्वारा होती है। अतएव अग्नि का सम होना आवश्यक है। हितकर आहार को 'पथ्य' एवं अहितकर आहार को 'अपथ्य' कहा गया है। पथ्याहार ही शारीरिक विकास का कारण बनता है, जबकि अपथ्याहार व्याधि का कारण। आज के परिवर्तनशील युग में आयुर्वेद प्रणीत जीवन शैली की अवहेलना, अनेक रोगों का कारण बनी है। इसी में एक व्याधि ''कामला'' है जिसके रोगियों की संख्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है। कामला को साधारण बोल-चाल की भाषा में ''पीलिया'' (Jaundice) नाम से जाना जाता है।

पीलिया का यकृत से संबंध बहुत पहले से मनीषियों को ज्ञात था जिसका वर्णन आयुर्वेदीय चरक संहिता में देखने को मिलता है । यकृत समस्त चयापचय क्रियाओं का आधार है, यह शरीर की सबसे बड़ी ग्रन्थि है व शरीर के ऊतकों व समस्त महत्वपूर्ण अंगों के क्रियान्वयन में सहायक है। यकृत संबंधी कोई भी विकार सम्पूर्ण शरीर की क्रियाओं को प्रभावित कर नानाविध रोग उत्पन्न करता है।

आचार्य चरक के मतानुसार नेत्र, त्वचा, नख, मुख का पीलापन व मूत्र का रंग पीतवर्ण होना और बाद में सम्पूर्ण शरीर का पीतवर्ण होना ही कामला रोग है।

आयुर्वेद में पाण्डु रोग की प्रवर्धमानावस्था को ही कामला माना गया है।

पाण्डुरोगी तु योऽत्यर्थं पित्तलानि निषेवते।
तस्य पित्तमसृग्मांसं दग्ध्वा रोगाय कल्पते।। -चरक चि0 16/34

आयुर्वेद मतानुसार पाण्डु रोग से पीड़ित रोगी यदि अत्यधिक पित्त वर्धक पदार्थों का सेवन करता है तो उसका पित्त और अधिक दूषित हो जाता है एवं रक्त और मांस को भी अत्यधिक दूषित (रंजित) करके कामला रोग की उत्पत्ति कर देता है।

हारिद्रनेत्रः स भृशं हारिद्रत्वङ्नखाननः।
रक्तपीतशकृन्मूत्रो भेकवर्णो हतेन्द्रियः।। -चरक चि0 16/35

कामला रोगी के नेत्र, त्वचा, मुख एवं नाखून हरिद्रा (हल्दी) के सदृश वर्ण वाले हो जाते हैं। मूत्र रक्त मिश्रित पीतवर्ण का दिखायी देता है। रोगी का वर्ण बरसाती मेंढ़क के समान हो जाता है तथा उसकी इन्द्रियां अपने विषयों को ग्रहण करने में असमर्थ हो जाती हैं।

कामला शुद्ध पैत्तिक रोग है। यह तीन प्रकार की होती है।

(i) कोष्ठाश्रित (ii) शाखाश्रित (iii) उभयाश्रित

कोष्ठ का अभिप्राय महास्त्रोत तथा शाखा से रक्त आदि धातु तथा त्वचा का ग्रहण किया जाता है। किसी भी कारण से रक्त में पित्त रंजक द्रव्यों (Bile Pigments) की वृद्धि होने से कामला की उत्पत्ति होती है। इसके कारण सर्वप्रथम नेत्रकला तथा त्वचा में पीलापन आ जाता है। जब प्रवृद्ध पित्त अपने सामान्य आशय में न जाकर शाखागत हो जाता है और कफ से आवृत्त होने के कारण पुनः कोष्ठ में नहीं आ पाता है तो शाखाश्रित कामला की उत्पत्ति होती है। यह रूद्धपथ कामला (Obstructive Jaundice) की स्थिति है। ऐसी स्थिति में कामला रोगी पित्त विहीन मल का त्याग करता है। मल का सामान्य पीतवर्ण जो पित्त के कारण होता है वह समाप्त हो जाता है। ऐसे मल को आचार्य चरक ने ''तिलपिष्ट'' अर्थात पिसे हुए तिल की पीठी (Clay coloured stool) की संज्ञा दी है।

''तिलपिष्टनिभं यस्तु वर्चः सृजति कामली'' -चरक चि0 16/124

यदि दोष केवल कोष्ठाश्रय हो जाये और शाखा (रक्तादि धातु एवं त्वचा) में ना पहुंचे तो इस स्थिति को अविबद्ध कामला या Non Obstructive Jaundice कहते हैं।

सामान्यतः पित्त के कोष्ठ और शाखा दोनों में रहने से उभयाश्रित कामला होती है। उभयाश्रित कामला प्रायः पाण्डु रोग के पश्चात् ही होती है।

अर्वाचीन शास्त्रों में कारण की दृष्टि से कामला के तीन भेद किये गये हैं-

1. **शोणांशनजन्य कामला (Haemolytic Jaundice) :-** यह रक्ताणुओं के अत्यधिक विनाश के कारण होती है। अपित्तमेहिक कामला में रक्तकण अत्यन्त भिदुर (Fragile) होते हैं। इनके टूटने से मुक्त शोणवर्तुलि (Haemoglobin) से पित्तरक्त (Bilirubin) भी अधिक मात्रा में बनता है। रक्त प्रवाह में इसकी उपस्थिति से जो कामला होती है उसे शोणांशनजन्य (Haemolytic) कामला कहते हैं। इसके अतिरिक्त मलेरिया, कालमेह ज्वर (Black water fever) के जीवाणु विष के कारण लाल कणों का नाश करते हैं जिससे शोणांशनजन्य कामला होती है। लाल कणों के विनाश से पाण्डु तथा अपथ्य सेवन से और अधिक विनाश होने से कामला की उत्पत्ति होती है तथा प्लीहा के विकृत होने पर भी कामला होती है।
2. **यकृतीय कामला (Hepatic Jaundice) :-** यह कामला यकृत के रोगों के कारण होती है। हेपेटाइटिस- औषधियों, वायरस, बैक्टीरिया व अन्य परजीवियों जैसे अमीबा व जियारडिया से होता है। इनसे उत्पन्न कुछ विशिष्ट विषों के कारण ही यकृत कोषाओं को हानि पहुंचती है अतः इसे विषमयताजन्य (Toxic) या औपसर्गिक (Infective) कामला कहते है। यकृत को संक्रमित करने में ''वायरल हेपेटाइटिस'' प्रमुख कारण है। वायरल हेपेटाइटिस को अंग्रेजी के वर्णमाला के अनुसार हेपेटाइटिस 'ए', 'बी', 'सी', 'डी' तथा हेपेटाइटिस 'ई' में विभाजित किया गया है।

   सामान्यतः वायरल हेपाटाइटिस 'बी' एवं 'सी' संक्रमित रक्त व संक्रमित सुई के द्वारा होता है, बैक्टीरियल, परिजीवी जन्य तथा वायरल हेपेटाइटिस 'ए' एवं 'ई' दूषित जल के कारण होता है। हेपेटाइटिस 'डी' उन्हीं को होता है जो हेपेटाइटिस 'बी' से संक्रमित होते हैं।
3. **अवरोधजन्य कामला (Obstructive Jaundice) :-** साधारणतया यकृतीय कोषाओं के द्वारा निर्मित पित्त का पित्तनलिका के द्वारा आन्त्र में उत्सर्ग होता है। किसी भी कारण से इसमें अवरोध उत्पन्न हो जाने पर पित्त यकृत में ही संचित होने लगता है एवं अन्ततोगत्वा यकृतीय रक्त वाहिनियों द्वारा पुनः शोषित होकर रक्त में चला जाता है। पित्त नलिका में अवरोध के निम्न कारण हो सकते हैं।

15 अक्टूबर 2009, श्री धन्वन्तरि जयन्ती के अवसर पर धन्वन्तरि वाटिका, राजभवन, उ0प्र0 में ''अगस्त्य'' का पौधा रोपित करते हुए महामहिम श्री बी.एल. जोशी, राज्यपाल, उ0प्र0 ।

i- परजीवी (Parasites)- Hydatid cyst, ascariasis ii- अग्नाशयिक शोथ(Pancreatitis) iii- पित्त की थैली में पथरी (Gallstone) iv- पित्त नलिका का कैंसर (Carcinoma of bile duct) v- अग्नाशयिक अर्बुद (Tumors of Pancreas) आदि।

कारणः-

(i) नवजात शिशुओं में यकृत के अविकसित रहने पर यह रोग सामान्यतः पाया जाता है परन्तु यह धीरे-धीरे स्वतः समाप्त हो जाता है।

(ii) यकृत विकार जैसे यकृत का संक्रमित होना, हेपेटाइटिस, विषम ज्वर(मलेरिया), अत्यधिक वसायुक्त भोजन का लम्बे समय तक सेवन एवं अत्यधिक मदिरापान से यकृत का विदीर्ण होना, वे औषधियॉ जो यकृत के लिए हानिकर हैं, उनका ज़्यादा सेवन करना, टी0बी0 व कैंसर के लिए प्रयोग की जाने वाली औषधियॉ ।

(iii) पित्त की थैली की अश्मरी या कैंसर अथवा पित्त के सामान्य प्रसरण के मार्ग में अवरोध उत्पन्न होने से।

(iv) लाल रूधिर कणिकाओं के अत्यधिक मात्रा में टूटने से जो कि सामान्यतया संक्रमण की स्थिति में अथवा औषधियों के दुष्प्रभाव से हो सकता है।

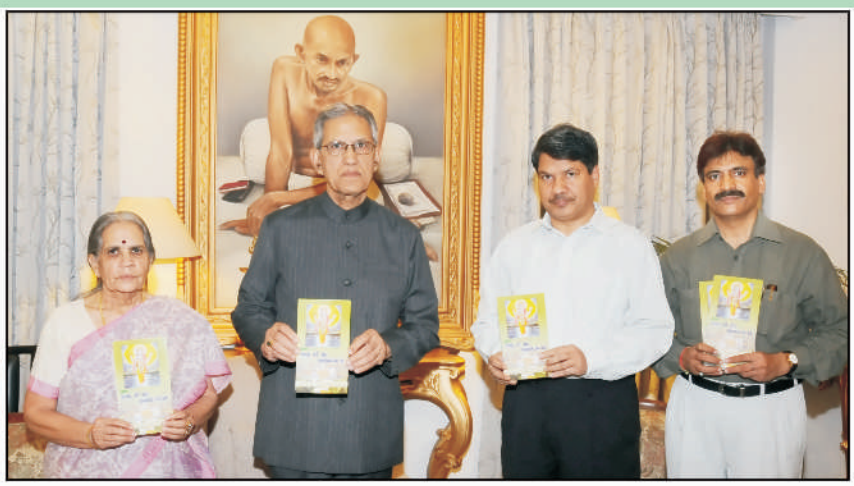

15 अक्टूबर 2009, श्री धन्वन्तरि जयन्ती के अवसर पर राजभवन, उ0प्र0 में "शतायु की ओर" पत्रक के नवम् पुष्प का लोकार्पण करते हुए महामहिम श्री बी.एल. जोशी, राज्यपाल, उ0प्र0।

लक्षण :-

दाहाविपाकदौर्बल्यसदनारूचिकर्षितः।
कामला बहुपित्तैषा कोष्ठशाखाश्रया मता।। -चरक चि0 16/36

कामला के रोगी में निम्न लक्षण दिखायी पड़ते हैं :-

- दाह (शरीर मे जलन महसूस होना)।
- दुर्बलता (शारीरिक कमजोरी)।
- अरूचि (भोजन की इच्छा न होना)।
- रोगी को बुखार रहना।
- आंख, नाखून व त्वचा का रंग पीला होना।
- पूरे बदन में दर्द होना।
- पेट में दर्द रहना ।
- अविपाक (भोजन का ठीक से न पचना)
- थका सा महसूस करना।
- जी मिचलाना या भूख का कम लगना।
- वजन का कम होना।
- मूत्र का पीला आना।
- शरीर का रूक्ष (रूखा) होना।
- मल का रंग बदल जाना।

निदान :-

कामला रोग का निदान रोगी के इतिवृत्त, शारीरिक परीक्षण, प्रकृति, दोष, दूष्य, स्रोतस, अग्नि की परीक्षा द्वारा किया जाता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से रोग के विभिन्न प्रकारों की पुष्टि हेतु प्रयोगशालीय जांचे भी करायी जाती हैं। इन परीक्षणों में **रक्त की जांच** में लीवर फन्क्शन टेस्ट- सीरम बिलिरूबीन, एलकेलाइन फास्फटेस, एस.जी.पी.टी., एस.जी.ओ.टी. आदि मुख्य हैं। इसके अतिरिक्त हेपेटाइटिस की पुष्टि के लिए एंटीजन व एंटीबाडी की भी जांच करायी जाती है। रोगी के **मूत्र की सामान्य परीक्षा** द्वारा मूत्र में बाइल पिगमेन्ट व यूरोबिलिनोजन की मात्रा का निर्धारण किया जाता है। **अल्ट्रासोनोग्राफी** से यकृत का बढ़ा या छोटा होना, पित्त की नली का फैलाव या अवरोध आदि का पता सुगमता से लगाया जा सकता है। कामला की गंभीर अवस्था में सी.टी. स्कैन, एम.आर.आई व लीवर बायोप्सी आदि अनेक परीक्षण भी कराये जाते हैं।

रोकथाम एवं बचाव :-

1. खाना बनाने, परोसने, खाने से पहले और शौच जाने के बाद हाथ साबुन से अच्छी तरह से धोयें।
2. भोजन ताजा एवं समय से करें एवं भोजन जालीदार अलमारी में या ढक्कन से ढक कर रखना चाहिये ताकि मक्खियों व धूल से बचाया जा सके।
3. पीने के लिये नल, हैण्डपम्प या आदर्श कुओं का ही पानी काम मे लायें और सुनिश्चित करें कि पानी संक्रमित न हो। इस हेतु पानी छानकर या फिर उबालकर लेना हितकर रहता है।
4. मल, मूत्र कूड़ा करकट का सम्यक विसर्जन होना आवश्यक है।
5. गंदे, सड़े, गले व कटे हुये फल बाजार से क्रय न करें और न ही खायें। खुले हुए खाद्य पदार्थ संक्रमित हो सकते हैं अतैव इनके प्रयोग से बचें।
6. स्वच्छ शौचालयों का प्रयोग करें यदि शौचालय में शौच न जाकर बाहर ही जाना पड़े तो आवासीय बस्ती से दूर जायें तथा शौच के बाद उसे मिट्टी से ढ़कें।
7. रोगी बच्चों को जब तक कि चिकित्सक न बता दे कि वे रोग मुक्त हो चुके हैं स्कूल या बाहर न जाने दें।
8. कोई भी इन्जेक्शन लगाते समय सिरिंज व सुई को 20 मिनट तक उबाल कर ही काम मे लें अन्यथा ये रोग फैलाने मे सहायक हो सकती हैं। आज कल व्यवहार में डिसपोजेबेल सिरिंज व सुई प्रचलित हैं।

9. रक्त देने वाले व्यक्तियों की खून की जाँच कराने के उपरान्त ही उनका रक्त किसी को चढ़ाना चाहिए क्योंकि वायरल हेपेटाइटिस संक्रमण का यह मुख्य कारण है।
10. वायरल हेपेटाइटिस 'ए' एवं 'बी' से होने वाले पीलिया से बचाव के लिए वैक्सीन उपलब्ध है अतैव इसे लगवा लेना चाहिए।
11. अपना दाढ़ी बनाने का रेजर व टूथब्रश दूसरे को प्रयोग न करने दें।
12. प्रदूषित वातावरण में घूमना-टहलना या रहना नहीं चाहिये।
13. देर रात तक जागना अहितकर है।
14. ब्रह्मचर्य का पालन करें।
15. अपना वजन न बढ़ने दें क्योंकि सामान्य से अधिक वजन होने से यकृत (Liver) के अनेक रोगों से ग्रसित होने की सम्भावना बढ़ती है। अतएव चाहिए कि संतुलित खान-पान रखें तथा प्रातः भ्रमण, योगासन एवं प्राणायाम करें।

साध्यासाध्यता :-

कामला के रोगी में निम्नलिखित लक्षण असाध्यता के द्योतक होते हैं-

(i) मल मूत्र में कृष्ण व पीतवर्ण (ii) सर्वांग शोथ। (iii) नेत्र, मुख, मल तथा मूत्र का रक्तवर्ण होना। (iv) वमन (v) नष्टाग्नि (भूख का बिल्कुल न लगना) (vi) नष्ट संज्ञ (अचेतावस्था)

चिकित्सा :-

तिलपिष्टनिभं यस्तु वर्चः सृजति कामली।
श्लेष्मणा रूद्धमार्ग तत् पित्तं कफहरैर्जयेत्। -चरक चि0 16/124

रूद्धपथ कामला में जहां पित्त दोष शाखा में ठहर जाता है और कफ द्वारा उत्पन्न स्रोतावरोध के कारण कोष्ठ में नहीं आ पाता, वहां सबसे पहले कफ का ह्रास करें जिससे मार्ग शुद्ध हो जाये तथा पित्त शाखा से कोष्ठ की ओर आ सके । तदुपरान्त उपयुक्त विरेचनादि शोधन द्वारा पित्त निर्हरण करना चाहिए। इसके लिए निम्नलिखित उपक्रम करना चाहिए।

(i) अम्ल, कटु तीक्ष्ण उष्ण, लवण द्रव्यों का प्रयोग :- ये अम्लादि पदार्थ पित्त की वृद्धि करते हैं। कफ का ह्रास करके मार्गावरोध को दूर करते हैं और वायु का निग्रह करते है, परिणामस्वरूप दोष (पित्त) शाखा को छोड़कर कोष्ठ में आ जाता है। जिसकी पहचान यह है कि मल का रंग स्वभाविक पीतवर्ण का हो जाता है। इसलिये मल के वर्ण के पीत युक्त होने तक इन अम्लादि पदार्थों का सेवन कराना चाहिये।

(ii) दोषों को कोष्ठगत समझकर ही मृदुविरेचन द्वारा पित्त हरण करना चाहिए।

तत्र पाण्ड्वामयी स्निग्धस्तीक्ष्णैरूर्ध्वानुलोमिकैः।
संशोध्यो मृदुभिस्तिक्तैः कामली तु विरेचनैः।। -चरक चि0 16/40

कामला (पीलिया) रोग की चिकित्सा में प्रयुक्त होने वाले महत्वपूर्ण योगः-

1. **चूर्ण-** नवायस चूर्ण, ताप्यादि चूर्ण, अविपत्तिकर चूर्ण, नारायण चूर्ण, भूनिम्बादि चूर्ण।
2. **क्वाथ, कषाय-** फलत्रिकादि क्वाथ, पुनर्नवाष्टक क्वाथ, वासादि कषाय।
3. **आसव, अरिष्ट-** पुनर्नवासव, धात्र्यरिष्ट, कुमार्यासव, रोहीतकारिष्ट, पर्पटाद्यरिष्ट।
4. **घृत, तैल-** महातिक्त घृत, कल्याण घृत, पंचगव्य घृत, पुनर्नवादि तैल (वाह्य अभ्यगांर्थ)।
5. **लौह, मण्डूर-** नवायस लौह, यकृत-प्लीहारि लौह, कामलान्तक लौह, निशा लौह, पुनर्नवादि मण्डूर, वज्रवटक मण्डूर, पंचामृत लौह मण्डूर।

इन योगों का प्रयोग रोगी की प्रकृति, शारीरिक एवं मानसिक अवस्था, दोष, दूष्य, बल एवं अग्नि के अनुसार चिकित्सक की देखरेख में करना उचित रहता है।

पथ्य (जो लेना हितकर है)-

• पूर्ण विश्राम • प्रचुर शर्करा युक्त तरल भोजन • नीबू का शर्बत • गन्ने का शुद्ध व ताजा रस • अदरक, कालीमिर्च, हरा धनिया • लौकी, परवल, मूली, गाजर, टमाटर, पपीता, चुकन्दर का सेवन • मौसमी फल • अंजीर, मुनक्का, किशमिश • सन्तरा, मौसम्बी, अनार आदि फलों का रस • मूंग, मसूर की छिल्कायुक्त दालें • गो दुग्ध से बना पनीर व छेना

अपथ्य (जो लेना अहितकर है)-

• परिश्रम, व्यायाम एवं मानसिक तनाव • मदिरापान • आधुनिक फास्ट फूड • गरिष्ठ एवं अधिक चिकनाईयुक्त भोजन • लाल मिर्च, गर्म मसाले एवं तेज नमकीन पदार्थ

पथ्य का महत्व-

विनापि भेषजैर्व्याधिपथ्यादेव निवर्तते ।
न तु पथ्यविहीनस्य भेषजानां शतैरपि ।।
पथ्ये सति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैः।
पथ्येऽसति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैः ।। - वैद्य जीवन

ऐसा कहा जाता है कि पथ्य पालन करने वाले रोगी का रोग औषधि सेवन के बिना भी ठीक हो सकता है लेकिन पथ्यहीन रोगी के रोग, सैकड़ों औषधियों के सेवन से भी सरलता से ठीक नही हो पाते। यदि पथ्य पालन किया जाये, तो औषधि सेवन की कोई आवश्यकता नहीं होती। पथ्य पालन नहीं करने वाला यदि औषधि का भी सेवन करता है, तो यह औषधि सेवन अर्थहीन हो जाता है।

आभार प्रदर्शन - इस पत्रक में प्रकाशित सामग्री का संकलन विभिन्न संहिताओं एवं स्रोतों से किया गया है।

कामला (पीलिया) रोग में लाभकारी औषधीय पौधे

भृंगराज (Trailing eclipta)
हिन्दी नाम– भाँगरा
वानस्पतिक नाम– *Eclipta alba*
प्रयोज्य अंग– पंचांग

भूम्यामलकी
हिन्दी नाम– भुंई आँवला
वानस्पतिक नाम– *Phyllanthus amarus*
प्रयोज्य अंग– पंचांग

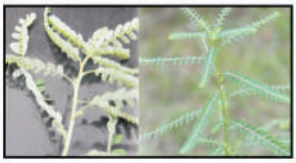

पुनर्नवा (Spreading hog weed)
हिन्दी नाम– गदहपुरना
वानस्पतिक नाम– *Boerhavia diffusa*
प्रयोज्य अंग– मूल एवं पत्र

किराततिक्त (Chiretta)
हिन्दी नाम– चिरायता
वानस्पतिक नाम– *Swertia chirayita*
प्रयोज्य अंग– पंचांग

कटुका (Picrorhiza)
हिन्दी नाम– कुटकी
वानस्पतिक नाम– *Picrorhiza kurroa*
प्रयोज्य अंग– मूल एवं भौमिक तना

गुडूची / अमृता
हिन्दी नाम– गिलोय
वानस्पतिक नाम– *Tinospora cordifolia*
प्रयोज्य अंग– तना

भूनिम्ब (The creat)
हिन्दी नाम– कालमेघ
वानस्पतिक नाम– *Andrographis paniculata*
प्रयोज्य अंग– पंचांग

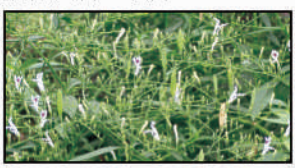

काकमाची (Black night-shade)
हिन्दी नाम– मकोय
वानस्पतिक नाम– *Solanum nigrum*
प्रयोज्य अंग– पंचांग

त्रिवृत् (Indian Jalap)
हिन्दी नाम– निशोथ
वानस्पतिक नाम– *Operculina turpethum*
प्रयोज्य अंग– मूल

द्रोणपुष्पी (Tamba)
हिन्दी नाम– गूमा
वानस्पतिक नाम– *Leucas cephalotes*
प्रयोज्य अंग– पंचांग (विशेषतः पत्र)

निम्ब (Margosa tree)
हिन्दी नाम– नीम
वानस्पतिक नाम– *Azadirachta Indica*
प्रयोज्य अंग– त्वक (छाल)

घृतकुमारी (Indian aloe)
हिन्दी नाम– ग्वारपाठा / घीकुआंर
वानस्पतिक नाम– *Aloe vera*
प्रयोज्य अंग– पत्रों का गूदा

वासा (Malabar nut)

हिन्दी नाम– अडूसा
वानस्पतिक नाम– *Adhatoda vasica*
प्रयोज्य अंग– पंचांग

रोहीतक (Honey tree)

हिन्दी नाम– रोहेड़ा
वानस्पतिक नाम– *Tecoma undulata*
प्रयोज्य अंग– त्वक (छाल)

कासनी (Chicory)

वानस्पतिक नाम– *Cichorium intybus*
प्रयोज्य अंग– बीज

चित्रक (Lead wort)

हिन्दी नाम– चीता
वानस्पतिक नाम– *Plumbago zeylanica*
प्रयोज्य अंग– मूलत्वक

आरग्वध (Indian laburnum)

हिन्दी नाम– अमलतास
वानस्पतिक नाम– *Cassia fistula*
प्रयोज्य अंग– फलमज्जा

हरीतकी (Chebulic myrobalan)

हिन्दी नाम– हरड़
वानस्पतिक नाम– *Terminalia chebula*
प्रयोज्य अंग– फल

15 जुलाई 2010,'वन महोत्सव' पखवारे के अवसर पर राजभवन, उ0प्र0 में बच्चों के साथ वृक्षारोपण करते हुए महामहिम श्री बी.एल. जोशी, राज्यपाल, उ0प्र0 ।

शरपुंखा (Wild indigo)

हिन्दी नाम– सरफोंका
वानस्पतिक नाम– *Tephrosia purpurea*
प्रयोज्य अंग– मूल, पंचांगक्षार

आमलकी (Emblic myrobalan)

हिन्दी नाम– ऑवला
वानस्पतिक नाम– *Emblica officinalis*
प्रयोज्य अंग– फल

दारुहरिद्रा (Indian barberry)

हिन्दी नाम– दारूहल्दी
वानस्पतिक नाम– *Berberis aristata*
प्रयोज्य अंग– मूल एवं कांड

पर्पट (Fine leaved fumitory)

हिन्दी नाम– पित्तपापड़ा
वानस्पतिक नाम– *Fumaria vaillantii*
प्रयोज्य अंग– पंचांग

2 अगस्त 2010, राजभवन, उ0प्र0 में भिन्न रूपेण योग्य बच्चों के साथ वृक्षारोपण करते हुए महामहिम श्री बी.एल. जोशी, राज्यपाल, उ0प्र0 एवं श्रीमती संतोष जोशी।

5 अगस्त 2010, राजभवन, उ0प्र0 में वरिष्ठ नागरिकों के साथ वृक्षारोपण करते हुए महामहिम श्री बी.एल. जोशी, राज्यपाल, उ0प्र0 एवं श्रीमती संतोष जोशी।

धन्वन्तरि वाटिका का उद्देश्य

राजभवन में स्थापित की गयी धन्वन्तरि वाटिका का मुख्य उद्देश्य आयुर्वेदीय औषधि पौधों के ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाना है। यह तभी सम्भव है जब ऐसी धन्वन्तरि वाटिकाएं प्रदेश के विभिन्न अंचलों में स्थापित हों तथा इन पौधों के औषधीय गुणों के विषय में जन सामान्य को बहुमूल्य जानकारी उपलब्ध करायी जाय ताकि वे आयुर्वेद के रूप में प्राप्त पूर्वजों की अनमोल धरोहर से लाभ उठा सकें ।

कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश का सहयोग के लिये आभार

कृषि विभाग उ.प्र. द्वारा कृषकों के हित में संचालित मुख्य योजनाएँ :-

1. कृषि के समग्र विकास हेतु ''राष्ट्रीय कृषि विकास योजना'' का संचालन।
2. गेहूँ, धान एवं दलहन के उत्पादन में वृद्धि हेतु राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजना का संचालन।
3. मृदा स्वास्थ्य सुधार योजना का संचालन।
4. जिंक सल्फेट, जिप्सम, जैव उर्वरक एवं बायो एजेन्ट की कृषकों को अनुदान पर उपलब्धता।
5. कृषकों की जागरूकता हेतु विभिन्न स्तरों पर कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम।
6. कृषि यंत्रीकरण को बढ़ावा देने हेतु कृषकों को अनुदान पर उन्नतशील कृषि यंत्रों की उपलब्धता।

☞ कृषि विभाग से संबंधित अधिक जानकारी हेतु निःशुल्क दूरभाष 1800-180-1551पर अथवा किसान कॉल सेन्टर 0522-4155999 पर सम्पर्क करें या विभागीय वेबसाइट www.agriculture.up.nic.in देखें

आलेख :

डा0 शिव शंकर त्रिपाठी

एम.डी.(आयु.)

प्रभारी चिकित्साधिकारी, राजभवन आयुर्वेदिक चिकित्सालय

एवं प्रभारी अधिकारी, धन्वन्तरि वाटिका, राजभवन, उ0प्र0, लखनऊ

दूरभाष - 0522-2620494 (विस्तार- 210), 0522-2419887 (नि0)

प्रकाशक :

धन्वन्तरि वाटिका, राजभवन, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

मुद्रक :

संयुक्त निदेशक

प्रसार शिक्षा एवं प्रशिक्षण ब्यूरो, कृषि विभाग

9, विश्वविद्यालय मार्ग, लखनऊ। दूरभाष- 0522-2781042